

श्री वा क व ज्ञा य न म ४ ॥
१ स र्व म न्न क म्पा प च न क्ता वि वि

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

II-41

लङ्कित १०
 स्तुति १०
 प्रयत्न १०
 ०० का १०
 पका १०
 नका १०
 कण्ड १०
 मास १०
 न्यात १०
 कल १०
 न्यात १०
 न्यात १०



ସମ୍ପାଦକ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

कठक १ ७
सासक १ ७
न्याक १ ७
कलक १ ७
मलक १ ७

चउ विं क सा त्म, चउ विं क
० दा ० न ०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री १५ केशव कृष्ण विष्णु नमः ॥
 स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ गुणमय लक्षणं कृष्णं ॥
 दत्तात्रेयं सदा विष्णुं ॥ सर्वकर्मिकदिगुं ॥ कनसादि
 लोचनं पद्मं ॥ ॥ ह्रीं मादिपूजां ॥ वक्रासाधनं ॥ मन्त्रं लवा ॥

उमिसवाज्जमानया ॥ ॥ पंचत्रकाया हा गुलिं ॥ किलता
 थडा २ गुजाप ॥ धूं × नि × रुता × पूजा × मु × य धर्मा ॥ ॥ यज्ज
 धनं लिजा न का धिषान ॥ ॥ पंचत्रकामं लपु निमा
 दिदडा मर्जा न थं पूजा ॥ ॥ पंचत्रका जं तु ज धर्मा
 मध्वसं कित्र न का स्यं पूजा ॥ साधनं पवसुत कानकं
 नकाडा हा स्यनं जाप थडा २ गुमत्त सिद्धं नृपा ॥

धनलिहट सा पंचत्रकादा न नडा गुहदानं मदन
 सावउ विंव-गुर्ज विंव. आत्मा विंवदान पूजा संक
 ल्यास्य विया द्याय ॥ ॥ धनलि सरु साह नि संक
 ल्यास्य पंचत्रकाया गु थडा २ दिगया मत्तं कं जा २
 इय रुना इय ॥ ॥ रुनं मध्वया उमिह लाखि स्वां
 सि ॥ पूर्वया आलं गह या सि क चा ॥ दक्षिण या वि

वासिह. मिह सि ॥ पञ्चिमया. मीह. धनसि कया ॥
 उरुनया. इव सिहः बा ०० वसि कया ॥ धमि यालं
 पाल हा म सन इय ॥ आदि हया विहि निह्यं क्र २
 जाय इय पाय मिह मा इय ॥ म नुनडा गृहया गु ॥ ००
 ॥ ॥ पत्र थडा २ रुता इय पं वष हा लप जा समा क्र
 न ॥ ॥ पत्र थडा २ वलि सलं व नय ॥ पं वत्र का

कागु दिगवलि म नु मा सि वा नाव लि विय ॥ का
 हाय क स वा रु म थ ॥ ॥ वलिये का ॥ क मा
 लि पूजा ॥ वा क पूजा ॥ ॥ सि व्या धि वा स न ॥
 पु न्ति याय ॥ स्व सि वा क मं ३ धम वा न ॥ प मा पं स ना
 रु व म निं ध ३ वि म पूजा ॥ पा थ स मा प ॥ ल्या व स्य स्यं द
 रु ना विय ॥ वा धा दू य ॥ दि गु स म य द्य स्यं क मा विः
 १ वि म पूजा

पञ्चाशत् ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ मया च कुसुमाक्ष ॥ ॥
सिद्धाहमि ॥ मंगलं वाक्कं जानक्याय ॥ नमः मंगलं वा
दि कलसासिखक ॥ नमः विषय ॥ गनचक्र ॥ कलंख
काय ॥ ह्यांककाय ॥ मख ॥ ३ दि ॥ ॥ ०० मिपचत्र
आविष्कन कंथ ॥

॥ पंचनका लिखन मारु ॥ ० ॥ अं नमः शिवाय ॥ ० ॥
आपां लाना दि ५ गु विव लु ॥ म नानू क ल क लाने. सखा स न ग्व म य
उप विल्या ॥ अं मा च क र हं रू ट ल्या हा ॥ कृ मि स्ताना न्म या ग न कृ नि पि ल्या
उं व क य क र हं ॥ ॥ गु व म लु ल दि सि ध न य पं व ग य ॥
थ न स मा धि जा ग ॥ ॥ न न ४ स ह द य न का न न व ड म लु
लं न स्था प त्रि पं का न व मि वि नि र्ग न ॥ गु व व ड वा धि स ल्या

ने ला स ॥ प र का इ क्का. म हा प्र मि स वा ४ प्र मि स वा प्र म् स वा न ग
न प नि वा नान ॥ प र य प प्पा धू पा ग ध व लि ने व या दी पं वा प र
न प र्जा ५ ॥ ॥ थ न म लु ल ल्यां वा य ॥ ॥ उं म वि ध नि व
जि मि म हा प्र मि स न व क मा रू रू ट ल्या हा ॥ म ध्व ॥ उं अ म
न व य. व न २ प्र व न वि ग ड हं रू ट ल्या हा ॥ प ॥ उं अ म न
वि ला कि नि ग र्त्त स व क नि आ क र्षा वि हं रू ट ल्या हा ॥ ६ ॥

ॐ विमलविष्णुयवव मम विष्णु हं २२२ स्वाहा ॥
प ॥ ॐ रुचरसं रुचर ॐ उीयवल वि (मधुने हं २२२
वच स्वाहा ॥ उ ॥ ॐ कालिय स्वाहा ॥ म ॥ ॐ कवालीय स्वाहा
ने ॥ ॐ कं कालिय स्वाहा ॥ वा ॥ ॐ व (रुचरीय स्वाहा ॥ ॐ ॥
पं लां यं मुनः ॥ ॥ पापं प्रमिद मय न ॥ उि वल मवर्ध
ग रुद्र, वाधिविला त्या दय न ॥ कृत लंप वि दम्य क्रमापय

न ॥ नमव तुर्वं विहा रा म्हा वय न ॥ न ह ४ खा ह्व र दम, क
म सखापु मिस्त्रापना, मीशी हि न सरेव त्ये नम दिना ॥ नथमा
वृप त्ये नापका न ४ सर्वधर्मा नमसा व लंय निर्विकल्प कं
विवि न्द्र ॥ मु न्यमा ह्ना नव ज स्वतात्मका हं नमा हं कानदा व
जमयी हं मिम धिष्ट न ॥ नने वव ज द, व जपं जल, व जपा का
न, व ज विना नं व वि विं ए ॥ ॥ न लक्ष संका नप वि दमं स

मन्त्रपर्वमं महाभाद्रपदशुक्ल नाना कृत्स्नाहिकीर्तिः कस्यप
विहंकात्रयविश्ववेजापुंकात्रयविधानं विश्वपत्रकलिङ्काक
मन्त्रिविन्मं ॥ नस्थापत्रिविधमधुलंमध्वपुंकात्रयविमिसल्लार्य
उ० ४ पंचज्ञानात्मकमाकथ्य ॥ सर्वमथागच्छे ४ सदवीकृत्यद्वी
ऊपविद्यममनवत्तमानधवत्सुकुनि ॥ ॥ महाप्रतिसत्राः
(गोत्रवत्सु) द्वित्रयवर्षाकुनि ॥ वैष्णवलंकनमृदुवडास

नल्ला ॥ सूर्यमधुलालीटावऊपर्यकिं क्षीप्रिनशा ॥ मष्ट
उजावलेकं शुल्ल ॥ मरिनाहात्रनापुल्लरुषिनाकटक
यत्रमदिनमखलो ॥ सर्वालंकालधविनि, नस्थातगवः
त्या ॥ प्रथममखं गोत्रवत्सु, दक्षिणैकं शुल्लं पुंकापीनं वामवत्सु
दक्षिणप्रथमउज्ज्वकं, द्वितीयवजं, रुनीयशत्रुवत्सु
खञ्ज ॥ वामउज्ज्वाम ४ द्वितीयप्रिमलं, रुनीयधनू ४ वत्सु

र्थपनम् ॥ वाधिरुक्तापुष्पला ॥ नानापुष्पदलायलंकृता
 उष्माविष्णुमहेश्वरनदिकेश्वरादिहि ४ संसृष्टा ॥ दवना
 गयक्रगन्धर्वदक्षिणपा ॥ सर्वसत्कनरिया ॥ ॐ नुयमववृष्ट
 वेमवधमसुनगवृष्ट किन्नरमहावगमदिहि ४ दवे ४ सु
 ना ॥ वागद्वेषमाहवासानानुसन्निवाहसिवावकादांश्च
 इष्टविला नाविध्यमनकवी ॥ सर्ववृद्धवाधिसत्कार्यग
 र्क ३ ३ मसुप्रमिसनाद्यादि ५ मय ५ म ५ प्रा ५ स्वाविद्य ५ पंलांघं

धवनपजातिनानांप्रिपावनकवी ॥ ॥ नुवंरुगातगव
 नीरुजधया ॥ गनसादत्रनिवंतवास्यासनावलम्ब्या ॥ ० ॥
 जापजाग ॥ प्र ॥ ३ मतिधनित्यादि ५ ॥ पूर्व ॥ नस्यामहा
 पुमिसनाया ४ पूर्वस्यांदिहि ॥ नथेवपूर्वयागमधिकृत्यवि
 म्वपममध्य ॥ ३ कावनवीजविद्रुपविद्यममन ॥ महासा
 रुप्रमर्दनीकसुवर्त्तुपिऊलाईकमानवकपालास्य

मु
 ३

कृता ॥ उक्ता निदंशु कलाल वदनाह न सूर्य मद्युलासन
ललिता कृपन महाकृम म हायकृमा कृम्यम ॥ कट कयव
मल्लिना ॥ दान नृप नरुषिना ॥ नस्या दक्षिण पुथम शुजवव
दवजं हि नियकं म ॥ हनीय म न वतुर्थ स्वर्ज ॥ का म पु
थम शुज म कृनीया म ॥ हि नियप न सूर मीय धनू वतुर्थ
पक्षाप निष कृ न ल ॥ नस्या मूल मूख कृ ॥ दक्षि (६) (म)

पृष्ठीकं वा म ह निनं ॥ सर्व निनं नाना न लाय लंक
न मी न ॥ महाव लय लाक म नो व म पट वक्रा पक्षाति
ना ॥ रु २३ म हा म ह मुपु म द नि स र्च पा पा ॥
पंला घं सु न ॥ म ॥ जा प जा ग ॥ ॥ इ म म न व न ला
दि ॥ ऊ ध र्मा ॥ ॥ द ॥ न ना म हा पु नि म ना य ॥
दक्षि न स्या दि सि ॥ वी श्व प म्मा प नि व उ म ह ल म ध्

मांका नवी जपविष्णु मनसटिमि सहा मायनी पीठ वल्गुस
यं मलु लाली रास लपयिहि नी. तिनजान्न हउजान लो
मकुटिसर्वाह व धा लुषिगा ॥ नस्या दक्षिणपुथममुज वन
द४ ॥ द्वितीय न लघटधना ॥ हृदियवकुं वउ. पथिवकु वाम
पुथममुजपा शापविहि कु ॥ द्वितीय मयूलपि हृदनीय

घटापवि विष्णुवजं ॥ वउ. पथिव ल धजं ॥ नस्या मूलसूरवं
पीमंदकि (हृदकु वामव कुान्न हउम कवकु पा. शासिग ॥
इंद्रमाय विहका व कस्य र्थ पा. शा. ॥ ॥ पंला चंमु
न ॥ शाप ॥ उ. न्न न व वरणादि. कु धम्मी ॥ ॥ प ॥
नका मरापु मि. मलाया ४ प ग्निमदि जि विष्णु पद्माप विवकु
मलु लसूय मं काल वीजप विष्णु मनसहा मंजानू सा वि.

सर्वहितनालं कृतां ॥ न ह्याऽप्यथमकुजा न ह्यवद्विमीयवजं ॥
हमियमवश्वामपुथममृतय द्विमियवजं ह मियव तन चजं
मूलमृत्यं ॥ ह विनंद किने रुद्रं वामनकं चम्य क वृक्षापुत्र
सांगला वयं ॥ ह ह्यादि ॥ पं लां यं तु ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

उं हल ह्यादि ॥ ॥ अथ या निदिष्टं मलु लं विराव्य ॥ न ह्या
वमि समरु ह्या फान् स्वस वी जान् व मि हि सर्वम थमना ता रु

व्य संप्र कृ पाथ यद् द हि धकं ॥ सि स मां त्मा । नं प म्भ ॥ ॥
पका मुस्य मना ह्याद, पूर्वकं सा वयं द्वि वक्र ह ॥ ॥ व द्वा
मा ह वा । उ म हा पु नि म ना ॥ अ म यं द प व जी, म हा सा रु पु म ह
नी ॥ द्वा स य मा त्म यं व जि म हा मा यू जी ॥ व कु वा ग व जी म
हा मां मु न्म सा व दी ॥ स्य र्मां ००० वि जी, म हा मा न व मि ॥
उ वं, व प व द ना, स ह्ना, स ह्ना वा वि ह्ना न र्क ध ध्मा लो य न ॥
स्य रा व ४ या ग ३ द्वा सर्व धर्मा ना जा ग ३ द्वा ह ॥ न तु व लि ला वः ॥

स्वभाव॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मन्त्रः ॥ ह्रीं क्लीं ॥
पं. लां घं तु न ॥ समाकृतं ॥ ॥ धनकलशमिदं ॥
जी न पञ्चपञ्चाथन प. नां दंडादानं ह्यमादिधूस्यलि ॥ ॥
यडा २ रिता ३ तु व ४ रावना ॥ ० ॥ ॥ मध्यसूनि
संगीतं लंखनहाय ॥ ३ वज्रयकृतं ॥ ॥ वज्रपिय ॥ ॥
मदनिवजिरववज्रबंधवर्हं ॥ धनलाहा मित्रका ॥ आक

षनि, पाद्यादिपूष्यास ॥ पं. क. सु. उ. कान्ति ह्यं थडा २ गु. मं. उ. ग.
पञ्चाय ॥ ॥ मध्यसू ॥ ३ ३ म. लि. ध. नि. व. जी. लि. म. हा. पु. नि. स. व.
न. क. २ मा. हं. २ रु. ट. स्था. हा. ॥ १ ॥ ॥ पू. ॥ ३ म. म. म. व. व. व. २ पु. व.
व. वि. म. ३ हं. २ रु. ट. स्था. हा. ॥ २ ॥ ॥ द. ॥ ३ म. म. म. वि. ला. कि. नि.
ग. र्. स. व. क. लि. म. क. र्. वि. हं. २ रु. ट. स्था. हा. ॥ ३ ॥ ॥ य. ॥ ३ वि. म. ल.
वि. पू. ले. ज. य. व. ले. म. म. म. वि. व. र्. हं. २ रु. ट. स्था. हा. ॥ ४ ॥ ३ ॥

ॐ हनरसम्वन २ ४० डियव लवि (अधन हं २ रु ट्वरु वन हं २
 रुट्स्या हा ॥ मिसाने स्य स्वा नमाला का स्वायकं सि हं लय ॥
 ॐ सप्रहि न वज स्वाहा ॥ ॥ यन सह अ ह नि जा कि रु १
 क १ हा प्रसं ॥ कसा म द क ना म स्यं हा प्रस्या मुख न प स्यं वि
 हि स हि न सं क ल्य या य म य ना हा या ॥ आ ह नि म गु पं व
 न का या थ २ रु प्र जा २ या य ॥ पं लां यं सु न x रु ना द य ॥

थन ॥ मध्या उ सि ह ला ख स्वां सि ॥ पूर्वया ॥ अलंग हल
 या सि क वा ॥ द क्रिं ॥ पि ला सि ह मि कु सि ॥ प विं ॥ अं ह
 धाले सि क या ॥ उ रु ॥ इ व न सि ह वा व व सि क वा ॥ ० ॥
 थ मि हा प्र स्या नं हा मां रु ना प मिं इ य ॥ । आ दि त्य या
 नं ॥ क १ हा प्रसं ० ० य प्रं जा प २ ॥ ३ म धा ला वा य स्वा
 हा ॥ रु ना द य ॥ पं लां यं सु न x ॥ व उ ॥ उ य हा म क १ ॥

३०० का. पका ९
मंड ॥ ॐ गी मां भुवनमस्तु ॥ रुना ॥ मंग ॥ ॐ का क १ जप
ॐ न का रु क मा लो य स्ता हा ॥ रुना ॥ वृ ३ ॥ वं का क १ जप
ॐ वा ज प वृ वृ ध य स्ता हा ॥ रुना ॥ वृ ह स्त नि ॥ न द्यो क १ ज
प ॥ ॐ हा ग स्त दा य न म ३ स्ता हा ॥ रुना ॥ ३ ३ कु ॥ क य गु क १
जप ॥ ॐ म सु वा रु मा य स्ता हा ॥ रुना ॥ स नी व न ॥ मा स
क १ जप ॥ ॐ ज नै व वा य स्ता हा ॥ रुना ॥ वा रु ॥ म्या न

क १ जप ॐ म म प्रि या य न म स्ता हा ॥ रुना ॥ क रु ॥
क ल क १ जप ॥ ॐ क्वा मि क न व स्ता हा ॥ रुना ॥ ज न्म ॥ म
ख क १ जप ॥ ॐ न मः क न्म न क रु स्त हा रु मा इ य ॥ ॥
पं लां व मु व ॥ स ना क ल ॥ ॥ ध न जा म क स ध न ॥ पु मि
स वा म पु ध १ ० ६ स्ता हा मि न्म का ॥ पू जा ॥ ॥ ध न ध ३ १ २
व लि स लं व न य ॥ न मा यं का ले न स्ता दि ५ ॥ ॥ ॐ ३ दि

मूडा॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ म ध्या ॥ महाप्रदिसुत्र. महावि
शालि. सर्वविद्याधिपकथ. ॐ दंतलिङ्गक २ म म सर्वसत्त्वा
नां च मायु वा वाग्य. आनिं कनू सर्वरुटपुनपि म वाप स्या वा
दीनमात्रय २ म दय २ सं जय २ म म सर्वसत्त्वा नां च व २ म २
स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सत्त्वमुक्तानपनः सर्वदिग्दिग्ग्यः स्वाहा ॥ ॥ पूर्व ॥ वा
उमहासाहस्यप्रमदनी विद्या वाही. सर्वग २ नि वा वही. म
म सर्वसत्त्वा नां च आनिं कनू पूषिं कनू. वरुध कनू सर्वद
वना गयक ग न्धर्वा सत्र गनू उ किन्न न महात्रगा. रुम पुनः
पि म वादीन ह न २ द ह २ प च २ म प २ वि धुं गय २ म हा गं
ह पुदि नि ॐ दंतलिङ्गक २ म म सर्वसत्त्वा नां च व २ म २

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ धन धा धन धा प्रभं स नीतं ज नी प्रहं ज नी
विषम नि किं प्रवृष सक न साव व नि साव पि सूत्र ध धा
विनी मु ध व व (ह) धा य व नि साव गि ख ल्ल लु दान प न
अनि पृष्टिं क नू पूर्व स्यां दि गि ख हा ॥ ॥ द किं ॥ ॥
ॐ मा हा मा य वी वि धा ना हि सर्व विष प्र भ म नि सर्व स हा

नां व ज्ञं मि क नू पृष्टिं क नू व र ध क नू सर्व द व ना ग य क
ग व वी सू व वृ गं उ किं न न म हा न ग दी नू रु न र प व र दे ह
मा व य र ग र्ज य र न र्ज य र नू द व लि गं दू र म म सर्व स
त्या नां व व क र र ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ ॐ अनि अन व व नि का ॥
नि का व व नि किं क सि कि व पि कि व व नि ध व लि वं ध नि
ह मि धा व वि वि र मि धा व नि हि म व नि जा नि च व (ह)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमः ॥

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

II-41

पञ्चश्रीमपर्वभरवजा (गु) कटि लक वा (गु) पु का वि व ऊ
व नि वि उ का नि म नि स स्त सु दा न य म * वृ ह न स्या
दि मि स्वा हा ॥ ॐ कालि क लालि कं रा हि म नि वि नि
क म ला क्रि हा वी मि ह वि क मि श्री म नि ह वि पि म ल लं
म्व पु लं म्व काल पा ग क वृ म्म द नि य म इ नि य म वा कू

सि रु न ग्र स नी पु स नी पु मी च्छ (थ मं ग न्ध मू र्ध्वा धू पं दी पं
व लिं व दा स्या मि न कू र मां सर्व स त्वा ना म्भ सर्व त था प ड
व र्णा र्जा व वु व र्व गी नं प ष्च तु म न दा म न सि ध्वा तु म डा मि
अ म उ प दा ४ स्वा हा ॥ ॥ आ ग र्छ २ थ ग न्ध मू र्ध्वा धू पं
व लिं व मू र्छ थ पु य र्छ थ म न सर्व स त्वा ना म्भ न कू र्क वृ न ४

उं वन दहं स्त्रिस्तु वा वि तिस्रा हा ॥ ॥ धन विविधं
पञ्चा ॥ ॥ द्वा हा यक ॥ यज दवलि ॥ ॥ ॐ शुभ नू व
जि सुहृद वसं धै विमं वगृहं तु वलिं विजिष्ठं अग्नि य
माने मग लपतिं म्म सा प पु नि वायू ध ना वि प म्म ॥ ॐ
मन रु ना वि प नि म्म द वा सु ड ह व डा ल य नि म्म द

वा सम स्ता पु वि य व ना म्म ध वा २ गु फ ग हा सम ना पु नि २
त्व क नि वे द यं नि स्त क स्त का वे व दि म्म सु रु ना स प पु दा
नो म रु ह ल सै न्म म्म नि व पृ स्तिं व कृ व न्म नि स ध पे वा
स्ति पृ ष्य व लि वि स प न व पु ऊ तु कि प्रं तु पि वं तु सर्व ॐ
दं व क म्म सु रु लं य गं तु ॥ च क वृ क ५ ॥ ॥ ० ॥

कमालिपूजा ॥ वाकपूजा ॥ ॥ सिखा धिवा सन ॥ पूरु
खलिवाकपू १५ सह च नना ॥ पाथ समाफ ॥ विमपूजा
दकना ॥ वाध ॥ वैका विथ ॥ दिगुसमयः कुमा विथय ॥ म
कुसमयसमाव ॥ ॥ सिखा कुमि विज दिगुवडका
यदधुधनलष ॥ पिवालपू ॥ नका कखयका जान लडा
डा स्य ॥ कलम हिमक ॥ मंगलवाय ॥ खलिवाकपूज

गनचकुत्वा का काय ॥
मंगल ॥ सादि ॥ ० ॥ किं व निन स्वा ॥ पुदिसनममु
खं सुध सप रि काय कं मय क ॥ पुदव पी सा ता वा सु स्वा
त्म का पया ॥ ॥ कसु वे पु म हा था वा सु कु ना सि मा हा
वत्त ॥ इ दान रु न रु ना सा जा र व जान मा म्प ह ॥
म हा स्तान रु वा द थी रु म वे मु उ रा क लि ॥ मा यू नी सा

नमस्तुविद्यावाहीनमानमः॥ ॥ वाचवकाविभ
लाक्रीविकवासावृहाशिव॥ पप्रवागपुलादवीन
मस्तुगगन्माकवि॥ ॥ वेदव्यासकनिर्तासामदना
स्तुकविप्रभा॥ काशाईष्टदनीहंसिनमाभिदिव्य
पिनी॥ ॥ ॐ निगुपववकाविभानममापु॥
राकननसिंहस्यस्यपार्थलिरिमंउरंसर्वदा॥

पञ्च (क्षान्ति) धान

ॐ नमः ॥ नमस्तु वाय ॥ गुरुमाया वाधिंदला ॥ ० ॥
झांषांता वादवी पापन ॥ मृगसतपूजा ॥ पूषा धूप मंदूला
पिन्दपात्रसं ॥ दीप ॥ नेथद लस्मासपंवाभनपम्य सुगंध ॥
पात्रादि

[illegible]

家

ॐ हं ब्रह्म ब्रह्म ॥ ॐ वज्र यज्ज ॥ ॐ वैजयन्त ॥ ॐ वज्रया
सद्गो ॥ ॐ वज्रयमा कयन कि नि कुट् ॥ ॐ वज्र सिषल हं कुट् मत् ॥ ॐ वज्र कर्मकं
॥ ॐ वज्र हं का वन हं ॥ ॐ मघि धत्रि वज्रि नि मक्षयति स न वज्र २ मां हं रुं रुं स्वा
हा ॥ ॐ गि न ज्ञा वक्र ॥ ॐ मघि धत्रि वज्रि नि स्वादि ॥ सं स्वा धि स्म नः ॥ ॐ य कि स
य सुर्व विघ्नान्ता न हं रुं रुं स्वाहा ॥ या ज्ञना स्व स्व मर्ग न यूथा दि ॥ ॐ आरु मेः
धुलो धि स्म नः गि र सुहृ दय भू काल न वड मधु लं ग स्या यत्रियं का वन

विजं कदम्बिनां यमि सुत्रायुमाखानां सुगद्यविवादानां क. व. ख. य. न. ॥ ३ ॥
वजां क. स. ज. उ. व. ज. स. यो. दी. उ. व. जा. ह. म. व. ॥ ३ ॥ व. जा. व. म. हा. ॥ ३ ॥ य. व. स्का. नो. य.
यमि सुत्रादियुक्ते द. वि. र. ना. व. का. य. या. यं. यु. मि. ह. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ यं. क. म. नं. आ.
व. म. नं. ॥ ३ ॥ ऊ. ह. व. हो. ॥ ३ ॥ आ. ह. ॥ ३ ॥ ह. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ म. वि. धि. वि. वा. जि. नि. मा. हा. य.
मि. स. य. ह. र. ह. र. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ म. र. ध. म. स्या. ग. हा. ॥ ३ ॥ अ. मृ. ग. व. न. व. न. र. य. व. ल. वि. ह. य.
ह. र. ह. र. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ कि. ॥ ३ ॥ अ. मृ. ग. वि. ला. कि. नी. ग. र. स. न. क. नी. आ. क. र. वि. नि.

ह. र. ह. र. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ य. जि. ॥ ३ ॥ वि. म. न. वि. य. न. क. य. व. ल. अ. मृ. ग. वि. र्थ. ह. र. ह.
र. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ उ. क. व. ॥ ३ ॥ ए. व. र. स. मृ. न. र. ॥ ३ ॥ यि. य. व. ल. वि. धि. वि. नि. य.
व. न. ह. र. ह. र. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ म. धा. ल. का. थ. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ मि. कां. स. य. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ न. का. म. के.
मा. वा. थ. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ व. ड. व. ड. थ. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ श. म. स्या. दा. थ. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ य. स. वा. क. मा. थ. स्वा.
हा. ॥ ३ ॥ कृ. कृ. व. र्हा. थ. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ अ. मृ. ग. पृ. था. थ. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ क. मि. क. क. थ. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ कृ. हि.
क. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ ल. हि. नि. थ. स्वा. हा. ॥ ३ ॥ मृ. ग. मि. थ. ॥ ३ ॥ आ. दा. थ. ॥ ३ ॥ य. न. व. स. ॥ ३ ॥ य. व. ॥ ३ ॥

असनयाथ x उं मघाय x उं यूर्वर्गुणि x उं उरुवर्गुनि x उं हस्ताथ x उं विष्ठा
 थ x स्वाकिथ x उं विमायाथ x ॥ ७ ॥ अज्जनाथ x उं अघाथ x उं मूलाथ x उं यूर्
 वीरु x उं उग्राखाट x उं अविनीथ x उं अवन x ॥ ७ ॥ उं धनस्ता x उं सक विष्ठा
 थ x उं यूर्वर्गुदाथ x उं उरुवर्गुदाथ x उं लवकिथ x उं असनीथ x उं रुद्र निथ x ॥
 ७ ॥ उं उं दाथ x उं जमाथ x उं वनूदाथ x उं कुवलाथ x उं अरुगथ x उं नोपाथ
 x उं वायूथ x उं उं सानाथ x ॥ ॥ उं नमासवकथागरुसूत्रलालितविना

सन नमामि ऊं हूं वं हां ४ कसूमांजलि नाथ हां ४ ॥ यथा यहा वपुजा ॥ लास्या ॥
 उं वज्रसत्त्वसहागवज्रनलमनू हूं वं वज्रधर्मागयनीवज्रकर्मकृत्वा लव
 ॥ अस्तुलास्या ॥ उं नमस्तु हूं नमामी हूं नमानमस्तु स्वाहा ॥ हूं स्वाहा ॥ वज्र ॥ उं हा
 स्वाहा ॥ यं ४ ॥ उं किं ॥ लकिं ॥ विलायव धनं रव ले सर्व काम संय कयं शुभग
 दाफिवल ॥ ३ ॥ मां किं ॥ या ० ॥ नन वृजनाम कलं नलानालक विधान कर्मसा
 ल्यमिदं यवक ॥ ॥ कृत्वा कालिकमनूमादिकमकुसुमवसनमयाथ

कोलिनेयं च गसर्वं सुभावं धिः प्रकः यतिद भयास्थना वसुधा वद्वयमाने
 ससुखा सुखगानामगदगारि नं सकलजगदर्थयसादकनदहं ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते ॥ ॐ स्वरावधुधसर्वधर्मास्वरावधुधार्हं ॐ भू न्यगाहानि
 वः स्वरावधुधसर्वधर्मास्वरावधुधार्हं ॐ भू न्यगाहानि
 नादि हि न वृक्षवमिदं विंशत्ययम ॥ १ ॥ गोत्रवर्धनं चैव यद्वृत्तिः ॥ मूलीवः
 जयप्यका निदिनं जयप्यका निदिनं जयप्यका निदिनं

दी ३

क्रिनती प्रवामत्रकं पृथ्वीतं ॥ दक्रिनयथमरुजनवक्रं दिकियनवक्रं किरू
 यनभवं च उरर्थवप्रं च कि ॥ वामयथमरुजनवक्रं दिकियनवक्रं किरू
 गियनधनचउर्थयनसु ॥ १ ॥ नवंरुकारुगवगियनिसवांरावयक ॥
 कस्यमरु ॥ ॐ मविधविदकीमि महायुक्तिमलहं ॥ १ ॥ दस्वाहा ॥ कस्यायकोवि
 धयमरु ॥ ॐ मविधविदकीमि महायुक्तिमलहं ॥ १ ॥ दस्वाहा ॥ कस्यायकोवि
 वशरु ॥ ॐ मविधविदकीमि महायुक्तिमलहं ॥ १ ॥ दस्वाहा ॥ कस्यायकोवि

गां सुलसूर्यासनां ललिक्रया मूलमुखं ककुं । दक्षिणैरध्वगवामत्रकय
थपीगवसर्वादिनज्ञाज्ञरुजासर्वेयथमादिकिथीकिरुमियत्रुर्थवज
जुकीं सनखप्रत्रकि वामयथमादिकिथीकिरुमियत्रुर्थसूर्यगङ्गा नया
थयत्रसुधनयधायालिबलरध्वीकिवाललकिरुमहासुगमयादिसमाकां
गासर्वीलकाले सुविगा ॥ ॥ दक्षिणत्रुमधुलायनिमोमात्रजासाहा
मायूत्रीयोतवर्हसिमूखासूलमुखं पीगदक्षिणैरध्वगवामत्रकं यद्विन्ः

पिनपंज्ञरुजासर्वयथमजुनद्विनिथिनिथित्रुर्थवजदत्रलत्रत्रव
प्रधाविद्वामयथमादिकिथिनिथित्रुर्थयाथायात्रिकिरुमयूत्रयिद्वयव्हा
यविचित्त्रवजत्रध्वजरध्वीकिवाललयय्यीकिनिबलमकटिनीसर्वीचकात्र
सुविनि ॥ ॥ यथस्थिमत्रुमधुलायनिमंकात्रविजयविनगंसहामका
नूसात्रनित्रकवर्हसिमूखासूलमुखं ककुं दक्षिणैरध्वगवामत्रकं यद्विन्ः
उजासर्वयथमादिकिथीकिरुमियत्रुर्थयत्रमयसुज ॥ दक्षिणयथम

उजायां धर्मवज्रमूडा इति समाधि मूडा की गित्य वन्द वज्रमूडा गित्या
मयथमधिगित्य ह गित्य वरुथय च मयथम मूडा न धर्म मूडा समाधि
मूडा कर्तुं नियासय मा कर्तु क न स न्तु ना धन रश्चि ॥ न त मूक कि
नी सर्वा न का न रूषि नि ॥ ॥ उरु न व द म धु नाय नि शा का न जा ना
महा भि क व कि ह नि क व र्धु नि मूयाय कि मूया नि न ना मूय मूयः
द नि ना द कि न धु क वा म न क व लु जा स य य थ म दि गित्य रु ति

य लु ऊ न रु य व ज स न र्ध नि ॥ वाम य थ म दि गित्य रु ति य लु ऊ क
र्तु निया म न्तु ध क ध न र्ध नि ॥ क था ग म क नि नि सर्वा लं काल लु यः
नि ॥ ॥ क क वा य पूर्व सा दि सि स का र्थ स र्थ स र्थ न क व र्धु स
व क क वा यां स ना क ध न ॥ क स वा म र्ध न न द्वा सा म धु क व र्धु स व क
ल क ला यां मू क क ध न ॥ गू र्म न्द्र गू र्ध ॥ सु ग लं ला हि क व र्धु सर्व नः
क ना न ॥ वाम न मानू क मू र्ण रु क मा ना हि न यं द धा नं ॥ द कि न स्यां

विचिसिंहसुशुकाः अलवधसवसाधितवर्धुः सोनाः धनसा आदक
साकृष्णः अगस्तिरवावृषसायीताः पूर्वहृदायी साहविनाः उग्रहृदयी ०
साशुकाः नयनिकवकाससाशुकसाः अश्विजसुवधामिनाः हनूः
नियमाजनाहविना ॥ ॥ ॐ हृदयीगवर्धुहृत्तिहृः कनाथां अहय
वज्रधनाः यमकिहृवर्धुमहियस्ययमदधुधवाः वनूधशुकवर्धुमकलह
नागयूजधनाकृष्यनयीतवर्धुजससहानकूलिविजयूलकधवाः अहने

नकवर्धुशुगलः शिदधुधवाः नेत्रयकृषुमनसुः खजधवा वायव्यहनि
नवर्धुमृगसुः यमाकधवा ॥ ॐ आनशुकवर्धु देवसुः शिथुलधवा सुवयथानि
हृमलुलं विरुथं कस्यावमीसमहानवायध्वककास्वददयविर्यानिवभीनि
आयका अलभयः समसुहृधुवकमारुथोय्यकयुगुवाकल्लययगथरुयन
गगधकृलसुवयित्वाहाननकमाकृष्यसुखवापनियस्वसमयं वनेयवम
यग ॥ कगधयमकलालीउमविरुथ ॥ कस्यालधर ॥ मः सर्वकथागकाकृष्यसमखं

वज्ररिक्तकयाथयम् ॥ वडाक्षुसखादि ॥ आकर्षक्युत्थीरु ॥ रुडय अरिखक
कृष्ण ॥ उदकमकूटवडाक्षुनामा ॥ अर्थययन्यास ॥ अष्टलाखाय ॥ अवा
दनलुकि ॥ ॥ अथाकसंयवक्तामीकायमडुलमरुमं ॥ समाधिमुद्रां वधाका
रवयम् ॥ वक्रुषामाहवकीमहाप्रोक्तम् ॥ १२ ॥ अथाधरवकीमहासाहसुयमदनी
॥ ध्यानयो ॥ व्यावकीमहासायनी ॥ वक्रुषागवकीमहासकुनसावनि ॥ स्थसमा
यैषुयवकीमहाभीतवकी ॥ निलखास्वास्वरावयम् ॥ आकर्षन ॥ अर्थययन्यास ॥ यं

लांघंठुकि ॥ रुडवसमयउत्तामकुंठयम् ॥ अननीविदिना ॥ यीनवमकुंठ
जानूवायम् ॥ अनिदवकायाहिनसाधनामेविद ॥ रिक्तसाकुमानस्यनज्जरी
क्रिनंजयम् ॥ कालगंकलकथा ॥ लारगसंगुमिधर ॥ यवदाकिनिरुडड्डुषान
यानसौर्येदिक ॥ असनिविन्दुत्मायानायवकवधमार्गथा ॥ रुत्तामकुसुमवनिर्ग
सर्वसंकांनिधुदनं ॥ रुडववकुमठ ॥ सर्वसत्त्वाहिकार्थयसर्वसत्त्वाहिकादय
॥ यनकनीविद ॥ अखमायषावाधिकुडव ॥ आकर्षनययदास ॥ य अयहावय

[illegible]

डा॥ छ ॥ ॐ मह्ययति सत्र महासाहस्युर्मदनि महामायत्री महामला
नसावनोमहासीतवर्तिवद्वारधेवरायादवीकथाकृषि वरुसंकवकंजारध
गानेधेववमहाकालिचंद्रकिच वरुदृश्यकथापत्रासूयासिवरुयासिध्व
जयानिमहावल्लवमात्रामहाविद्यातरेधेवामिरुकुं उलिश्रययाकिगाम
हादवीकानकधूमहावल्लवकथाधंन्यामहासागयप्रकुन्दलिश्रययाकि
गामहादवीचवचयूष्यादकिमनिचधूमवधूमकिमिचयिगला महारुजा

मथादवीधन्याश्चवृत्तालिनिस्त्राकृत्तिकरुमात्रेववृद्धाक्रिकिकनायः
 काकायालिनिमहाकागाधन्यात्रकश्चदीरुथाजन्याचवहवाविद्यासत्त्वान्
 ग्रहकात्रिको॥मथथ॥कालिकलालिकम्हादिषाखिकमालाक्रिहात्रिकः
 हत्रिकसीशीमांक्रिहत्रियंगलत्रन्वयत्रेवकात्रयारुकाकनभादालियमद्रुः
 क्रिरुमत्राकसाउरुयसनियनिद्धमःगन्धयूष्यधूपदियंत्रित्रिचदास्यामित्रक्रां

[illegible]

[illegible]

चतुर्धावदुष्टाय तं चन्द्रमधुलासनस्य यक्षाय विरुध्य भवतु दहस्तु वामि यन्मा रुर्यंगा
वाङ्मनरागणुक्तवर्हिविराद्यः चतुर्हस्तं रोगावकरो वथ रु वाय यरु कृत्या चं रु वा वा र्यरा
द्यः ॥ ॥ यथेष्टा विधानमाह वानसः श्रीवज्रसत्वाय ॥ संखलरं हारः ॥ ॐ वयं रुद्रं
वज्रनाथि यमदनिवर्जी रुद्रवज्रवन्द्यं ॥ धनलाहृतित्रक्ता ॥ आकर्षकायाद्यादिपू
ज्यादासु ॥ मध्य ॥ ॐ मधिवनी स्वादि ॥ १ ॥ ॥ पू ॥ ॐ जम्भव ॥ २ ॥ ॥ द ॥ ॐ जम्भ
गविला ॥ ३ ॥ ॥ य ॥ ॐ विमल ॥ ४ ॥ ॥ उ ॥ ॐ रुद्र ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॐ कालि

अस्वाहा ॥ द ॥ कर्कतसिंहं न्यास्वाहा ॥ य ॥ दुल्लविधनस्वाहा ॥ ड ॥ मक्रं मीः
 नास्वाहा ॥ ॥ दिग्यालया ॥ डों धूमनास्वाहा ॥ डों विनूटकास्वाहा ॥ डों
 विनूयाकास्वाहा ॥ डों वधवनास्वाहा ॥ ॥ धनप्रकासाधन जाय धूनिजां
 य ॥ पूजास्तुतिधर्मा अचलया वायुगिसवावा धूलिजाका धिष्टान दाच
 वयं पूजा ॥ धनं लिनाह मरु द्धयक स्वस्तिवार्कं ॥ गयज ॥ धनग्रह मधुलसं कि
 रं क ॥ ॥ अथ भर्षादि ॥ पूर्वस्तुति ॥ समन्वाह प्रभुमां वधा मर्यद्दस्वस्तिम

॥१॥

१ काथवाहलयाश्रीवजाकार्य, लक्षणत्रसिंहनध्वप्रलक
दयकाशलसर्वविग्नमभिनियायकदय। काशलमुह॥